© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Engineering and Technology

वैदिक वाङ्मय में विवाह स्वरूप विमर्श :– (सप्तपदी एवं अथर्ववेद के विशेष सन्दर्भ में)

साधना देवी
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

विवाह सूक्त का उल्लेख अथर्ववेद के 14 वे कांड का पहला सूक्त विवाह सूक्त के नाम से विख्यात है विवाह को संपन्न होने के लिए माता–पिता परिवार तथा समाज की स्वीकृति आवश्यक है क्योंकि विवाह के शुभ अवसर पर माता–पिता भाई बहन अपने आशीर्वचन से वर तथा वधू की मंगल कामना करते है तथा विवाह में भाई बंधू के अलावा देवताओं को साक्षी बनाया जाता है। जिसके सम्मुख वर तथा वधू का परिग्रहण संस्कार होता है। विभिन्न विद्वानों के द्वारा कहा गयाा है कि विवाह के अवसर पर माता–पिता कन्यादान करे तथा भाई के द्वारा लाजा होम संपन्न कराया जाता है। यदि विवाह के समस्त कर्म संपन्न कर दिये जाये और सप्तपदी नहीं होता है तो विवाह सपन्न नहीं माना जाता है। क्योंकि सप्तपदी विवाह का अभिन्न अङ्ग है यदि जिस विवाह में सप्तपदी होता है वह विवाह वैदिक विवाह कहलाता हैं वर्तमान समय में विभिन्न विद्वानों द्वारा वेद को साक्षी न मानकर पुराण को साक्षी मानकर उसका सरल रूप दिया गया है। जिसमें सप्तपदी का रूप ही बदल दिया गया है। सप्तपदी को सनातन धर्म में सात जन्मों का बंधन बताया गया हैं। सप्तपदी के पश्चात् कन्या को वामांङ्गी किया जाता है अर्थात् कन्या को वर के बाये तरफ बैठाया जाता है। इसके विषय में कहा गया है कि–

यावात्कन्या न वामांङ्गी तावत्कन्या कुमारिका।

अर्थात्–जब तक कन्या वाम अङ्ग की अधिकारिणी नहीं होती तब तक वह कुमारी कहलाती है। वेद के अनुसार सप्तपदी इस प्रकार है जिसमें वर कन्या से कहता है कि–

ऊ इश एक पदीभव सा मामनुव्रत्ता भव।

विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै वहूँस्ते संतु जरदिष्टयः।।[1]

अर्थात– हे देवी तुम धन एवं ऐश्वर्य और खाद्य पेय वस्तुओं की प्राप्ति के लिए मेरे साथ प्रथम पग बढ़ाओ तथा सर्वदा मेरे अनूकूल गति करने वाली बनी रहो तथा भागवन् विष्णु तुम्हारे इस व्रत को दृढ़ करे। और तुम्हे श्रेष्ठ पुत्रों से युक्त करे जो वृद्धावस्था में हमें सहायता प्रदान करें।

ऊँ ऊर्जे द्विपादी भव सा मामनुव्रत्ता भव।

विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान विन्दावाहै बहुंस्ते संतु जरदिष्टयः ।।[2]

हे देवी! तुम त्रिविध बल तथा पराक्रम की प्राप्ति के लिए दूसरा पग बढ़ाओं। सदा मेरे अनूकूल गति करने वाली रहो। भगवान विष्णु तुम्हें इस व्रत में दृढ़ करें और तुम्हें संतान से युक्त करें जो बुढ़ापे में हमारा सहारा बनें...।

ऊं रायस्पोषाय त्रिपदी भव सा मामनुव्रता भव।

विष्णुस्तवनयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते संतु जरदिष्टयः ।।[3]

हे देवि! धन सम्पत्ति की वृद्धि के लिए तुम तीसरा पग बढ़ाओं सदा मेरे अनूकूल गति करने वाली रहों भगवान विष्णु तुम्हें इस व्रत में दृढ़ करें और श्रेष्ठ सन्तान से युक्त करें जो बुढ़ापे में हमारा सहारा बनें।

ऊं मयोभवाय चतुष्पदी भव सा मामनुव्रता भव।

विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्तें संतु जरदिष्टयः।।[4]

हे देवि! तुम आरोग्य शरी और सुखलाभवर्धक धन संपत्ति के भोग की शक्ति के लिए चौथा पग आगे बढ़ाओं और सदा मेरे अनुकूल गति करने वाली रहो भगवान विष्णु इस व्रत में दृढ़ करें और तुम्हें श्रेष्ठ सन्तान से युक्त करें जो बुढ़ापे में हमारा सहारा बनें।

ऊं पशुभ्योः पंचपदी भव सा मामनुब्रता भव।

विष्णुस्त्वनयतु पुत्रान् बिन्दावहै बहूंस्तें संतु जरदिष्टयः।।[5]

हे देवि! तुम घर में पाले जाने वाले पांच पशुओं (गाय, भैस, बकरी, हाथी और घोड़ा) के पालन और रक्षा के लिए पांचवा पग आगे बढ़ाओं और सदा मेरे अनुकूल गति करने वाली रहो भगवान विष्णु तुम्हें इस व्रत करें और तुम्हें श्रेष्ठ संतान से युक्त करें जो बुढ़ापे में हमारा सहारा बनें।

ऊं ऋतुभ्य षट्पदी भव सा मामुनव्रता भव।

विष्णु स्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्तें संतु जरदिष्टयः।।[6]

हे देवि! तुम छः ऋतुओं के अनुसार यज्ञ आदि और विभिन्न पर्व मानने के लिए और ऋतुओं के अनुकूल खान–पान के लिए छठा पग आगे बढ़ाओं और सदा मेरे अनुकूल गति करने वाली रहो भगवान विष्णु तुम्हें इस व्रत में दृढ़ करें और तुम्हें श्रेष्ठ संतान से युक्त करें जो बुढ़ापे में हमारा सहारा बनें।

ऊं सखे सप्तपदी भव सा मामनुव्रता भव।

विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्तें संतु जरदिष्टयः ।।[7]

हे देवि! जीवन का सच्चा साथी बनने के लिए तुम सातवॉ पग आगे बढ़ाओं और सदा मेरे अनुकूल गति करने वाली रहो। भगवान विष्णु तुम्हें इस व्रत में दृढ़ करें और तुम्हें श्रेष्ठ संतान से युक्त करें जो बुढ़ापे में हमारा सहारा बनें।

कन्या–

विवाह एक ऐसा पारस्परिक सम्बन्ध है जो दो सन्तानों के साथ–साथ दो परिवारों का जीवन भी पूरी तरह बदल जाता है। भारतीय विवाह में विवाह की परम्पराओं में सात फेरों का भी एक चलन है जो सबसे मुख्यरस्म होती है। हिन्दू धर्म के अनुसार सात फेरों के बाद ही शादी की रस्म पूर्ण होती है सात फेरों में दूल्हाा व दुल्हन दोनों से सात वचन लिए जाते हैं। यह सात फेरे ही पति–पत्नी के रिस्ते को सात जन्मों तक बांधते हैं।

प्रथम वचन–

तीर्थ व्रतोद्यापन यज्ञकर्म मया सहैव प्रियवयं कुर्याः,

वामांग मायामि तदा त्वदीयं ब्रवीति वाक्यं प्रथम कुमारी।।[8]

अर्थात् कन्या वर से कहती है कि यदि आप कभी तीर्थ यात्रा को जाओ तो मुझे भी अपने संग लेकर जाना, व्रत इत्यादि धर्मानुष्ठान में आप हमें अपने बाायीं ओर अवश्य स्थाान दें।

द्वितीय वचन–

पुज्यौ यथा स्वौ पितरौ ममापि तथेशभक्तो निज कर्म कुर्याः।

वामांग मायामि तदात्वदीयं ब्रवीति कन्या वचन द्वितीयम्।।[9]

तृतीय वचन–

जीवनम् अवस्थात्रये मम पावनां कुर्यात,

वामांगंयामि तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं तृतीयम्।।[10]

अर्थात् आप मेरा तीनों अवस्थाओं में पालन करें।

चतुर्थ वचन–

कटुम्बसंपालन सर्वकार्य कर्तु प्रतिज्ञां यदिकांत कुर्याः।

वामांगमायामि तदात्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं चतुर्थम्।।[11]

अर्थात् जिस तरह आप अपने माता–पिता का पालन करते हैं उसी तरह मेरे भी माता–पिता का पालन करें। क्योंकि समस्त कुटुम्बों का पालन आपके हाथ में है।

पंचम वचन–

स्वसद्यकार्ये व्यवहारकर्मण्ये अये मामापि मन्त्रयेथा।

वामांग मायामि तदा त्वदीयं ब्रूतेवचः पंचमन्त्र कन्या।।[12]

अर्थात् विवाह आदि में जो पैसे खर्च करे उसमे मेरी भी राय अवश्य लें।

षष्ठम् वचन–

न मेयमानमं सविधे सखीनां द्यूतं नवा दुर्व्यसनं भंजश्चतें।

वामाग्माायामि तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं च षष्ठम्।।[13]

सखियो अथवा अन्य स्त्रियों के बीच बैठी हूँ तब आप वहां पर सबके सम्मुख किसी भी कारण से मेरा अपमान न करें।

सप्तम् वचन–

परस्त्रियं मातृसमां समीक्ष्य स्नेहं सदा चेन्मयि कान्त कुर्याः।

वामांग मायामि तदा त्वदीयं ब्रूते वचः सप्तम मन्त्र कन्या।।[14]

अर्थात् आप पराई स्त्री को माता–पिताा को समान समझे तथा पति–पत्नी के बीच किसी को भागीदार न बनाएं।

ये वचन किसी को अपना दास बनाने के लिए नहीं बल्कि एक संतुलित सुचारू गृहस्थी चलाने के लिए है। और सातवे पद के बाद दोनो सखा भी तो बन जाते हैं। इसके बाद ध्रुव तारे के दर्शन कराये जाते है। ध्रुव अपनी अटल भक्ति और दृढ़ निश्चय के लिए जाना जाता है। वर वधू को ध्रुव तारा दिखाता है और कहता है तुम ध्रुव तारे को देखो वधू ध्रुव तारे को देख कर कहती है जैसे ध्रुव तारा अपनी परिधी में स्थिर रहता है वैसे ही मैं भी अपने पति के घर में कुल में स्थिर रहूं उसके बाद वर बधू को अरूंधनी तारा दिखा कर कहता हैं, हे वधू अरूंधती तारे को देखो वधू अंरूधति तारे को देख कर कहती हैं हे अरूंधती जिस तरह तू सदा वशिष्ट नक्षत्र की परिचर्या में संलग्र रहती है इसी प्रकार मैं भी अपने पति की सेवा में संलग्र रहूँ, संतानवती होकर सौ वर्ष तक अपने पति के साथ सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करूँ, और फिर आती है सबसे रोचक रस्म की बारी वर अपने दाएं हाथ से वधू के हृदय को स्पर्श करते हुए कहता है मैं तुम्हारे हृदय से अपने कर्मो के अनुकूल करता हूँ मेरे चित्त के अनुकूल तुम्हारा चित्त हो मेरे कथन को एकाग्रचित हो कर सुनना प्रजा का पालन करने वाले ब्रह्मा जी ने तुम्हें मेरे लिए नियुक्ति किया है।

अथर्ववेद में दाम्पत्य जीवन का विस्तृत उल्लेख प्राप्त होता है। दम्पत्ति के महत्व का वर्णन करते हुए कहा गया है। कि पुरूष सामवेद है तो स्त्री ऋग्वेद हैं। दोनो के हृदय परस्पर मिले हुए है वे दोनो एक दूसरे का ही चिन्तन करें तथा एक हृदय पर विजय प्राप्त करें, जिससे वे एक दूसरे से पृथक न हो। दोनो का प्रेम इतना प्रबल हो कि वे एक दूसरे के हृदय को उसी प्रकार हिला दे जैसे वायु तिनके को। वे एक साथ मिलकर चलें, और मिल कर रहे। मिलकर ऐश्वर्य प्राप्त करें। उनके चित्त और कर्म समान हो। दम्पत्ति के लिए उपदेश दिया गया है कि वे दोनो सदा पुरूषार्थी हो। श्रद्धा पूर्वक कार्य करने वाले को ही संसार में सुख मिलता है। वे उन्नति के साथ बढ़े और अक्षय ऐश्वर्य प्राप्त करें। दम्पत्ति परस्पर सहयोग के द्वारा एक सुखमय संसार बना सकते है। वे परस्पर अपने मनोभावों को छुपावे और चोरी से कोई वस्तु न खावे वे परस्पर हास्य और विनोद करें तथा हसमुख हो। गाय पुत्र सुन्दर गृह आदि से युक्त होकर सुखमय जीवन बितावे शरीर को दूषित करने वाले रोगों से बचे और ऐसे गुणों को अपनावे, जिससे उनका शरीर निरोग और तेजमय हो। वे सत्य बोले प्रमाद न करें। क्योंकि सत्य भाषण से ही सौभाग्य और श्री की वृद्धि होती है वे सदा सुगम और सुखद मार्ग पर चले । इस से दुखों का नाश और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। दोनो का जीवन संयमी और सुखमय हो। दोनो ऐश्वर्य से युक्त होकर के सदा प्रसन्न चित रहें। दोनो में सदबुद्धी हो। वे ऋतुकालाभिगामी हो।

अथर्ववेद में पति के लिए वर शब्द का प्रयोग किया गया है इसके लिए विशेषण दिए गए है। गुणों का बोध होता है। पति को संभल अर्थात पत्री का पालक कहा गया है। 'भगेनसह' के द्वारा उसका ऐश्वर्य युक्त होना अभिप्रेत है। धनपति शब्द से उसका समृद्धशाली होना गुण है। 'प्रतिकाम्य' शब्द से उसका हार्दिक प्रेमयुक्त होना बताया गया है। साथ ही यह अभिप्रेत है कि वधू उसको हृदय से चाहती है। कन्या के गुण बताए गए हैं ब्रह्मचारिणी अर्थात् संयमी जीवन व्यतीत करने वाली हो 'सुमति' शब्द से कन्या का विदुषी और बुद्धिमती

होना गुण बताया गया। 'वल्गु' शब्द से उसके सौंदर्य और दक्षता अभिप्रेत है। इसका अभिप्राय यह है कि वह बुद्धिमती और मनोहारी होनी चाहिए। वह सभा आदि में अपने गुणों से सबके मन को हर सकें शिवाय नारी के द्वारा संकेत है कि वह परिवार के लिए शुभ एवं कल्याणकारी हो।

आत्मन्वती और उर्वरा शब्दों से अभिप्रेत है कि वह स्वाभिमान और आत्मिक शक्ति से युक्त हो तथा पति के परिवार को सुसंतानों से युक्त कर सके। वधू के और अन्य गुण बतायें गये है। वह (अघोर) हो अर्थात् किसी को कुदृष्टि से ना देखें। अपतिघ्री अर्थात पति का किसी प्रकार से अहित न करें। स्योना और सुयमा शब्दों से अभिप्राय यह है कि वह परिवार वालों की सेवा करने वाली हो उसका अन्यगुण है कि वह वीर संतानों को जन्म देने वाली हो देव द्युम्त आस्तिक हो सुमनस्य वाली हो तथा देवरों आदि को हानि न पहुचाने वाली हो। विवाह का उचित समय बताया गया है कि जब वर तथा वधू युवा हो और दोनो के हृदय में एक दूसरे की प्रति प्रेम प्राप्ति की कामना करते हो। अतः कहा गया है कि पति को पत्नी की कामना हो और पत्नी को पति की तब विवाह करे। अथर्ववेद के अनुसार सच्चारित्र और सुशील कन्या का विवाह हो। ऋग्वेद और अथर्ववेद की मान्यता है कि–

सोमो प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तर।

त्रितीयों अग्रिषू ते पतिषू, तुरीयस् मनुष्यजा।।[15]

सोमस्या जाया प्रथमं गन्धर्वस्तेपरः।

त्रितीयो अग्रिष्ते पतिस्तुरिस्ते मनुष्यजाः।।[16]

मनुष्य पति कन्या का चतुर्थ पति होता है सोम, गंधर्व और अग्नि ये तीन देवता विवाह से पूर्व उसके पालक होने के कारण पति है। सोम देवता कन्या को सुशीलता वं सोम्य गुण देता हैं गंधर्व स्वर माधुर्य देता है। अग्रि उसको तेजस्विता एवं अदधृश्यता देता है। विवाह से पूर्व ये तीन देव कन्या के पालक एवं उसके चरित्र के रक्षक होते है। अतः इनको दिव्य पति कहा गया है। इनका क्रम बताया गया है कि तुम सोम गंधर्व को कन्या देता है। गंधर्व अग्निको और अग्रि मनुष्य को अन्या समर्पित करता है। अथर्ववेद में एक स्थान पर कहा गया है। यदि स्त्री ब्राह्मणेतर में दस विवाह करती है और ग्यारहवीं बार ब्राह्मण से विवाह करती है। तो ब्राह्मण को ही उसका पति माना जाएगा। क्षत्रिय वैश्य को नहीं इस से ज्ञात होता है कि स्त्री संबंध विच्छेद करते हुए ग्यारह पति तक विवाह कर सकती है। साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि ब्राह्मण पति को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

अथर्ववेद में एक मंत्र में स्वयंवर विवाह का संकेत मिलता है। मंत्र के अनुसार आए हुए जनों का नाम लेना और उसमें से एक (इन्द्र) के वरण का उल्लेख है। इस से ज्ञात होता है कि स्वयंवर विवाह में आए हुए

प्रार्थियों का नाम लेकर उनका परिचय दिया जाता है और कन्या उनमें से किसी एक को अपना पति चुनती है एक मन्त्र में यह भी ज्ञात होता है कि कन्या के परिवार की ओर से वर को कुछ धन आदि भी दिया जाता है। इसमें स्वर्ण गाय बैल और धन का उल्लेख है एक अन्य मंत्र में भी स्त्री धन देने का उल्लेख है। इस मंत्र में 'वहतु' शब्द से विवाह के समय दिया जाने वाला धन आदि अभिप्रेत है। यह स्त्रीधन माना जाता है।

प्रारंभ में कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को कुछ वस्तुएँ भेजी जाती हैं इसको आजतक तिलक कहा जाता है तिलक और विवाह के कुछ समय का अंतर किया जाता है। मंत्र में माघ नक्षत्र या माघ मास आदि भेजने का वर्णन हैं और फाल्गुनी नक्षत्र या फाल्गुन मास में विवाह का समय बताया गया है। सूर्य पुत्री सूर्य का अश्वनी कुमार के साथ विवाह समय बताया गया है।

अथर्ववेद में विवाह से संबद्ध कुछ अन्य बातों का उल्लेख है। वधू को सुंदर वस्त्र पहनाने का उल्लेख है। ऋग्वेद में भी वधू को सुंदर वस्त्रों से अलंकृत कहा गया है। वधू के माथे पर 'ओपश' नामक आभूषण लगाकर सजाने का वर्णन है। इसके टीका कहते हैं। आंखों में अंजन लगाने का उल्लेख है। साथ ही में स्त्री धन ले जाने का वर्णन है। पतिगृह को जाती सूर्या के साथ क्रोस और बिस्तार का उल्लेख है। उपवर्हण शब्द 'तकिया और बिस्तर' दोनों का बोधक है। दोनों अर्थ यहाँ लिए जा सकते हैं। सधवा स्त्रियों के लिए आंख में अंजन लगाना' घी आदि चिकनाई का प्रयोग और रत्नों को धारण करना उचित बताया गया है। स्त्री के सिर पर लंबे केश सौंदर्य के सूचक हैं। स्त्री के पहनने में तीन वस्त्रों का उल्लेख है। इनको अशसन (धारीदार वस्त्र) विशसन (ओढ़नेकावस्त्र) और अधिविकर्तन (साड़ी या धोती) नाम दिये गए हैं। सगोत्र विवाह का निषेध बताया गया है। सगे भाई बहन का विवाह निषिद्ध गया है।

एक मन्त्र में विधवा विवाह का भी समर्थन किया गया है। मन्त्र का कथन है कि पति की मृत्यु के बाद पत्नी सन्तान के लिए अपनी आजीविका के लिए नवीन पति से विवाह कर सकती है। एक अन्य मंत्र में सम्बन्ध विच्छेद करके दूसरे पति से विवाह करने का उल्लेख है। पुनर्विवाह करने वाली स्त्री को **'पुनर्भू'** कहा गया है। इससे ज्ञात होता हैं कि स्वभाव या आचार विचार में विरोध होने पर सम्बन्ध विच्छेद (तलाक) करके पुनर्विवाह संभव है। अथर्ववेद के मंत्र में ऐसे भावी युग का भी संकेत किया गया है। जब सगे सम्बन्धियों में भी विवाह होने लगेगा। दुष्ट स्वभाव वाली स्त्रियों के विषय में कहा गया है कि वे पति के कुल को नष्ट करने वाली कृत्या (अभिचार कर्म) है।

निष्कर्ष :–

आज पश्चिमी देश जब लिंङ्ग भेद की बात रहे हैं तो हमारे यहाँ हजारों साल पहले नारी और पुरूष को कितना बराबरी का अधिकार था। विवाह का एक वचन दोनों के बराबर के दर्जे की बात ही नहीं करता है बल्कि वर वधू को अपना सर्वस्व दे रहा है। गृहस्थ को वेदों में सर्वश्रेष्ठ आश्रम माना गया है। विवाह केवल दो

शरीरों का नहीं दो आत्माओं, दो परिवारों का मिलन है। सनातन संस्कृति के 16 संस्कारों में से एक अति महत्वपूर्ण संस्कार है। विवाह को दो आत्माओं का अध्यात्मिक मिलन माना गया है। ऋग्वेद में वर–वधू विवाह के समय भगवान से एक प्रार्थना करते हैं ''विश्व के सृजनहार (ब्रह्मा जी), पालनहार (विष्णु जी) संहारकर्त्ता (आदि देव महादेव) अपनी शक्ति से और विवाह मंडप में विराजमान देवता और अन्य विद्वान् और महान् गण अपने शुभ आशीष से हमारी (वर–वधू) आत्माओं और हृदयों का एकीकरण इस प्रकार कर दें जैसे दो नदियों और दो पात्रों का जल परस्पर मिलकर एक हो जाता है। अर्थात् जिस प्रकार गंगा और यमुना की पवित्र धाराओं का संगम होने पर विश्व की कोई शक्ति उन्हें अलग नहीं कर सकती, इसी प्रकार आत्माएं भी परस्पर मिलकर शरीर से पृथक होते हुए भी आत्मा और हृदय से एक हो जायें''।

सन्दर्भ सूचीः–

1. सप्तपदी –3/7/7/11
2. सप्तपदी –3/7/7/12
3. सप्तपदी –3/7/7/13
1. सप्तपदी –3/7/7/11
4. सप्तपदी –3/7/7/14
5. सप्तपदी –3/7/7/15
6. सप्तपदी –3/7/7/16
7. सप्तपदी –3/7/7/17
8. सप्तपदी –3/7/7/18
9. सप्तपदी –3/7/7/19
10. सप्तपदी –3/7/7/20
11. सप्तपदी –3/7/7/21
12. सप्तपदी –3/7/7/22
13. सप्तपदी –3/7/7/23
14. सप्तपदी –3/7/7/24
15. ऋग्वेद –10/85/40
16. अथर्ववेद –14/2/3